CLASS NOTES

Class: पाँचवीं	**Topic:** नीति के दोहे (कबीरदास,रहीमदास)
Subject: हिन्दी	

दोहे

1- ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करें, आपहु सीतल होय।

2- दुःख में सुमिरन सब करैं,सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, दुःख काहे को होय।

3- माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मन का डारि दे, मन का मनका फेर।

4- बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय ।
जो मन खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय ।

5- रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय ।
टूटे से फिर न जुरे, जुरे गाँठ परि जाय ।

6- एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
रहिमन मूलहिं सीचिबों, फूले-फले अघाय ।

7- टूटे सूजन मनाइए, जो टूटे सौ बार ।
रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार ।

8- तरूवर फल नाहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कह रहीम पर काज हित, संपति संचहि सुजान।

निर्देश- उपरोक्त लेखन/ पठन सामग्री घर पर रहकर तैयार की गई है।